॥ श्रीहरिः ॥

श्रीमन्महर्षि वेदव्यासप्रणीत

महाभारत

(षष्ठ खण्ड)

[अनुशासन, आश्वमेधिक, आश्रमवासिक, मौसल, महाप्रस्थानिक और स्वर्गारोहणपर्व]

(सचित्र, सरल हिंदी-अनुवाद)

त्वमेव माता च पिता त्वमेव
त्वमेव बन्धुश्च सखा त्वमेव।
त्वमेव विद्या द्रविणं त्वमेव
त्वमेव सर्वं मम देवदेव॥

अनुवादक—

साहित्याचार्य पण्डित रामनारायणदत्त शास्त्री पाण्डेय 'राम'

श्रीहरिः

विषय-सूची

(अनुशासनपर्व)

अध्याय	विषय	पृष्ठ-संख्या
	(दान-धर्म-पर्व)	
१-	युधिष्ठिरको सान्त्वना देनेके लिये भीष्मजीके द्वारा गौतमी ब्राह्मणी, व्याध, सर्प, मृत्यु और कालके संवादका वर्णन.....	१७
२-	प्रजापति मनुके वंशका वर्णन, अग्निपुत्र सुदर्शनका अतिथि-सत्काररूपीधर्मके पालनसे मृत्युपर विजय पाना	२४
३-	विश्वामित्रको ब्राह्मणत्वकी प्राप्ति कैसे हुई—इस विषयमें युधिष्ठिरका प्रश्न	३१
४-	आजमीढके वंशका वर्णन तथा विश्वामित्रके जन्मकी कथा और उनके पुत्रोंके नाम...	३२
५-	स्वामिभक्त एवं दयालु पुरुषकी श्रेष्ठता बतानेके लिये इन्द्र और तोतेके संवादका उल्लेख.....	३६
६-	दैवकी अपेक्षा पुरुषार्थकी श्रेष्ठताका वर्णन	४१
७-	कर्मोंके फलका वर्णन.....	४५
८-	श्रेष्ठ ब्राह्मणोंकी महिमा.....	४७
९-	ब्राह्मणोंको देनेकी प्रतिज्ञा करके न देने तथा उसके धनका अपहरण करनेसे दोषकी प्राप्तिके विषयमें सियार और वानरके संवादका उल्लेख एवं ब्राह्मणोंको दान देनेकी महिमा	५०
१०-	अनधिकारीको उपदेश देनेसे हानिके विषयमें एक शूद्र और तपस्वी ब्राह्मणकी कथा..	५२
११-	लक्ष्मीके निवास करने और न करने योग्य पुरुष, स्त्री और स्थानोंका वर्णन	५७
१२-	कृतघ्नकी गति और प्रायश्चित्तका वर्णन तथा स्त्री-पुरुषके संयोगमें स्त्रीको ही अधिक सुख होनेके सम्बन्धमें भंगास्वनका उपाख्यान	६०
१३-	शरीर, वाणी और मनसे होनेवाले पापोंके परित्यागका उपदेश.....	६५
१४-	भीष्मजीकी आज्ञासे भगवान् श्रीकृष्णका युधिष्ठिरसे महादेवजीके माहात्म्यकी कथामें उपमन्युद्वारा महादेवजीकी स्तुति-प्रार्थना, उनके दर्शन और वरदान पानेका तथा अपनेको दर्शन प्राप्त होनेका कथन.....	८०
१५-	शिव और पार्वतीका श्रीकृष्णको वरदान और उपमन्युके द्वारा महादेवजीकी महिमा	१११
१६-	उपमन्यु-श्रीकृष्ण-संवाद—महात्मा तण्डिद्वारा की गयी महादेवजीकी स्तुति, प्रार्थना और उसका फल.....	११२
१७-	शिवसहस्रनामस्तोत्र और उसके पाठका फल	११७
१८-	शिवसहस्रनामके पाठकी महिमा तथा ऋषियोंका भगवान् शंकरकी कृपासे अभीष्ट सिद्धि होनेके विषयमें अपना-अपना अनुभव सुनाना और श्रीकृष्णके द्वारा भगवान् शिवजीकी महिमाका वर्णन.....	१३६
१९-	अष्टावक्र मुनिका वदान्य ऋषिके कहनेसे उत्तर दिशाकी ओर प्रस्थान, मार्गमें कुबेरके द्वारा उनका स्वागत तथा स्त्रीरूपधारिणी उत्तरदिशाके साथ उनका संवाद.....	१४३
२०-	अष्टावक्र और उत्तर दिशाका संवाद	१५१
२१-	अष्टावक्र और उत्तरदिशाका संवाद, अष्टावक्रका अपने घर लौटकर वदान्य ऋषिकी कन्याके साथ विवाह करना.....	१५३
२२-	युधिष्ठिरके विविध धर्मयुक्त प्रश्नोंका उत्तर तथा श्राद्ध और दानके उत्तम पात्रोंका लक्षण	१५४
२३-	देवता और पितरोंके कार्यमें निमन्त्रण देनेयोग्य पात्रों तथा नरकगामी और स्वर्गगामी मनुष्योंके लक्षणोंका वर्णन	१६२
२४-	ब्रह्महत्याके समान पापोंका निरूपण.....	१७०
२५-	विभिन्न तीर्थोंके माहात्म्यका वर्णन.....	१७१
२६-	श्रीगंगाजीके माहात्म्यका वर्णन.....	१७६
२७-	ब्राह्मणत्वके लिये तपस्या करनेवाले मतंगकी इन्द्रसे बातचीत.....	१८५
२८-	ब्राह्मणत्व प्राप्त करनेका आग्रह छोड़कर दूसरा वर माँगनेके लिये इन्द्रका मतंगको समझाना	१८७

अध्याय	विषय	पृष्ठ-संख्या
२९	मतंगकी तपस्या और इन्द्रका उसे वरदान देना	१८८
३०	वीतहव्यके पुत्रोंसे काशी-नरेशोंका घोर युद्ध, प्रतर्दनद्वारा उनका वध और राजा वीतहव्यको भृगुके कथनसे ब्राह्मणत्व प्राप्त होनेकी कथा	१९०
३१	नारदजीके द्वारा पूजनीय पुरुषोंके लक्षण तथा उनके आदर-सत्कार और पूजनसे प्राप्त होनेवाले लाभका वर्णन	१९५
३२	राजर्षि वृषदर्भ (या उशीनर)-के द्वारा शरणागत कपोतकी रक्षा तथा उस पुण्यके प्रभावसे अक्षयलोककी प्राप्ति	१९८
३३	ब्राह्मणके महत्त्वका वर्णन	२०२
३४	श्रेष्ठ ब्राह्मणोंकी प्रशंसा	२०४
३५	ब्रह्माजीके द्वारा ब्राह्मणोंकी महत्ताका वर्णन	२०७
३६	ब्राह्मणकी प्रशंसाके विषयमें इन्द्र और शम्बरासुरका संवाद	२०९
३७	दान-पात्रकी परीक्षा	२११
३८	पंचचूड़ा अप्सराका नारदजीसे स्त्रियोंके दोषोंका वर्णन करना	२१२
३९	स्त्रियोंकी रक्षाके विषयमें युधिष्ठिरका प्रश्न	२१५
४०	भृगुवंशी विपुलके द्वारा योगबलसे गुरुपत्नीके शरीरमें प्रवेश करके उसकी रक्षा करना.	२१६
४१	विपुलका देवराज इन्द्रसे गुरुपत्नीको बचाना और गुरुसे वरदान प्राप्त करना	२२०
४२	विपुलका गुरुकी आज्ञासे दिव्य पुष्प लाकर उन्हें देना और अपने द्वारा किये गये दुष्कर्मका स्मरण करना	२२३
४३	देवशर्माका विपुलको निर्दोष बताकर समझाना और भीष्मका युधिष्ठिरको स्त्रियोंकी रक्षाके लिये आदेश देना	२२६
४४	कन्या-विवाहके सम्बन्धमें पात्रविषयक विभिन्न विचार	२२८
४५	कन्याके विवाहका तथा कन्या और दौहित्र आदिके उत्तराधिकारका विचार	२३३
४६	स्त्रियोंके वस्त्राभूषणोंसे सत्कार करनेकी आवश्यकताका प्रतिपादन	२३५
४७	ब्राह्मण आदि वर्णोंकी दायभाग-विधिका वर्णन	२३७
४८	वर्णसंकर संतानोंकी उत्पत्तिका विस्तारसे वर्णन	२४२
४९	नाना प्रकारके पुत्रोंका वर्णन	२४६
५०	गौओंकी महिमाके प्रसंगमें च्यवन मुनिके उपाख्यानका आरम्भ, मुनिका मत्स्योंके साथ जालमें फँसकर जलसे बाहर आना	२४९
५१	राजा नहुषका एक गौके मोलपर च्यवन मुनिको खरीदना, मुनिके द्वारा गौओंका माहात्म्य-कथन तथा मत्स्यों और मल्लाहोंकी सद्गति	२५२
५२	राजा कुशिक और उनकी रानीके द्वारा महर्षि च्यवनकी सेवा	२५७
५३	च्यवन मुनिके द्वारा राजा-रानीके धैर्यकी परीक्षा और उनकी सेवासे प्रसन्न होकर उन्हें आशीर्वाद देना	२६०
५४	महर्षि च्यवनके प्रभावसे राजा कुशिक और उनकी रानीको अनेक आश्चर्यमय दृश्योंका दर्शन एवं च्यवन मुनिका प्रसन्न होकर राजाको वर माँगनेके लिये कहना	२६५
५५	च्यवनका कुशिकके पूछनेपर उनके घरमें अपने निवासका कारण बताना और उन्हें वरदान देना	२६८
५६	च्यवन ऋषिका भृगुवंशी और कुशिक-वंशियोंके सम्बन्धका कारण बताकर तीर्थयात्राके लिये प्रस्थान	२७०
५७	विविध प्रकारके तप और दानोंका फल.	२७२
५८	जलाशय बनानेका तथा बगीचे लगानेका फल	२७५
५९	भीष्मद्वारा उत्तम दान तथा उत्तम ब्राह्मणोंकी प्रशंसा करते हुए उनके सत्कारका उपदेश	२७८
६०	श्रेष्ठ अयाचक, धर्मात्मा, निर्धन एवं गुणवान्‌को दान देनेका विशेष फल	२८१
६१	राजाके लिये यज्ञ, दान और ब्राह्मण आदि प्रजाकी रक्षाका उपदेश	२८२
६२	सब दानोंसे बढ़कर भूमिदानका महत्त्व तथा उसीके विषयमें इन्द्र और बृहस्पतिका संवाद	२८५
६३	अन्नदानका विशेष माहात्म्य	२९२

अध्याय	विषय	पृष्ठ-संख्या
६४	विभिन्न नक्षत्रोंके योगमें भिन्न-भिन्न वस्तुओंके दानका माहात्म्य	२९६
६५	सुवर्ण और जल आदि विभिन्न वस्तुओंके दानकी महिमा	२९९
६६	जूता, शकट, तिल, भूमि, गौ और अन्नके दानका माहात्म्य	३००
६७	अन्न और जलके दानकी महिमा	३०४
६८	तिल, जल, दीप तथा रत्न आदिके दानका माहात्म्य—धर्मराज और ब्राह्मणका संवाद	३०६
६९	गोदानकी महिमा तथा गौओं और ब्राह्मणोंकी रक्षासे पुण्यकी प्राप्ति	३०८
७०	ब्राह्मणके धनका अपहरण करनेसे होनेवाली हानिके विषयमें दृष्टान्तके रूपमें राजा नृगका उपाख्यान	३१०
७१	पिताके शापसे नाचिकेतका यमराजके पास जाना और यमराजका नाचिकेतको गोदानकी महिमा बताना	३१३
७२	गौओंके लोक और गोदानविषयक युधिष्ठिर और इन्द्रके प्रश्न	३१९
७३	ब्रह्माजीका इन्द्रसे गोलोक और गोदानकी महिमा बताना	३२१
७४	दूसरोंकी गायको चुराकर देने या बेचनेसे दोष, गोहत्याके भयंकर परिणाम तथा गोदान एवं सुवर्ण-दक्षिणाका माहात्म्य	३२६
७५	व्रत, नियम, दम, सत्य, ब्रह्मचर्य, माता-पिता, गुरु आदिके सेवाकी महत्ता	३२७
७६	गोदानकी विधि, गौओंसे प्रार्थना, गौओंके निष्क्रय और गोदान करनेवाले नरेशोंके नाम	३३०
७७	कपिला गौओंकी उत्पत्ति और महिमाका वर्णन	३३३
७८	वसिष्ठका सौदासको गोदानकी विधि एवं महिमा बताना	३३६
७९	गौओंको तपस्याद्वारा अभीष्ट वरकी प्राप्ति तथा उनके दानकी महिमा, विभिन्न प्रकारके गौओंके दानसे विभिन्न उत्तम लोकोंमें गमनका कथन	३४०
८०	गौओं तथा गोदानकी महिमा	३४२
८१	गौओंका माहात्म्य तथा व्यासजीके द्वारा शुकदेवसे गौओंकी, गोलोककी और गोदानकी महत्ताका वर्णन	३४३
८२	लक्ष्मी और गौओंका संवाद तथा लक्ष्मीकी प्रार्थनापर गौओंके द्वारा गोबर और गोमूत्रमें लक्ष्मीको निवासके लिये स्थान दिया जाना	३४७
८३	ब्रह्माजीका इन्द्रसे गोलोक और गौओंका उत्कर्ष बताना और गौओंको वरदान देना	३५०
८४	भीष्मजीका अपने पिता शान्तनुके हाथमें पिण्ड न देकर कुशपर देना, सुवर्णकी उत्पत्ति और उसके दानकी महिमाके सम्बन्धमें वसिष्ठ और परशुरामका संवाद, पार्वतीका देवताओंको शाप, तारकासुरसे डरे हुए देवताओंका ब्रह्माजीकी शरणमें जाना	३५४
८५	ब्रह्माजीका देवताओंको आश्वासन, अग्निकी खोज, अग्निके द्वारा स्थापित किये हुए शिवके तेजसे संतप्त हो गंगाका उसे मेरुपर्वतपर छोड़ना, कार्तिकेय और सुवर्णकी उत्पत्ति, वरुणरूपधारी महादेवजीके यज्ञमें अग्निसे ही प्रजापतियों और सुवर्णका प्रादुर्भाव, कार्तिकेयद्वारा तारकासुरका वध	३५९
८६	कार्तिकेयकी उत्पत्ति, पालन-पोषण और उनका देवसेनापति-पदपर अभिषेक, उनके द्वारा तारकासुरका वध	३७१
८७	विविध तिथियोंमें श्राद्ध करनेका फल	३७३
८८	श्राद्धमें पितरोंके तृप्तिविषयका वर्णन	३७५
८९	विभिन्न नक्षत्रोंमें श्राद्ध करनेका फल	३७६
९०	श्राद्धमें ब्राह्मणोंकी परीक्षा, पंक्तिदूषक और पंक्तिपावन ब्राह्मणोंका वर्णन, श्राद्धमें लाख मूर्ख ब्राह्मणोंको भोजन करानेकी अपेक्षा एक वेदवेत्ताको भोजन करानेकी श्रेष्ठताका कथन	३७७
९१	शोकातुर निमिका पुत्रके निमित्त पिण्डदान तथा श्राद्धके विषयमें निमिका महर्षि अत्रिका उपदेश, विश्वेदेवोंके नाम एवं श्राद्धमें त्याज्य वस्तुओंका वर्णन	३८१

अध्याय	विषय	पृष्ठ-संख्या
९२-	पितर और देवताओंका श्राद्धान्नसे अजीर्ण होकर ब्रह्माजीके पास जाना और अग्निके द्वारा अजीर्णका निवारण, श्राद्धसे तृप्त हुए पितरोंका आशीर्वाद	३८४
९३-	गृहस्थके धर्मोंका रहस्य, प्रतिग्रहके दोष बतानेके लिये वृषादर्भि और सप्तर्षियोंकी कथा, भिक्षुरूपधारी इन्द्रके द्वारा कृत्याका वध करके सप्तर्षियोंकी रक्षा तथा कमलोंकी चोरीके विषयमें शपथ खानेके बहानेसे धर्मपालनका संकेत	३८६
९४-	ब्रह्मसर तीर्थमें अगस्त्यजीके कमलोंकी चोरी होनेपर ब्रह्मर्षियों और राजर्षियोंकी धर्मोपदेशपूर्ण शपथ तथा धर्मज्ञानके उद्देश्यसे चुराये हुए कमलोंका वापस देना	३९८
९५-	छत्र और उपानहकी उत्पत्ति एवं दानविषयक युधिष्ठिरका प्रश्न तथा सूर्यकी प्रचण्ड धूपसे रेणुकाका मस्तक और पैरोंके संतप्त होनेपर जमदग्निका सूर्यपर कुपित होना और विप्ररूपधारी सूर्यसे वार्तालाप	४०४
९६-	छत्र और उपानहकी उत्पत्ति एवं दानकी प्रशंसा	४०६
९७-	गृहस्थधर्म, पंचयज्ञ-कर्मके विषयमें पृथ्वीदेवी और भगवान् श्रीकृष्णका संवाद	४१९
९८-	तपस्वी सुवर्ण और मनुका संवाद—पुष्प, धूप, दीप और उपहारके दानका माहात्म्य	४२२
९९-	नहुषका ऋषियोंपर अत्याचार तथा उसके प्रतीकारके लिये महर्षि भृगु और अगस्त्यकी बातचीत	४२७
१००-	नहुषका पतन, शतक्रतुका इन्द्रपदपर पुनः अभिषेक तथा दीपदानकी महिमा	४२९
१०१-	ब्राह्मणोंके धनका अपहरण करनेसे प्राप्त होनेवाले दोषके विषयमें क्षत्रिय और चाण्डालका संवाद तथा ब्रह्मस्वकी रक्षामें प्राणोत्सर्ग करनेसे चाण्डालको मोक्षकी प्राप्ति	४३२
१०२-	भिन्न-भिन्न कर्मोंके अनुसार भिन्न-भिन्न लोकोंकी प्राप्ति बतानेके लिये धृतराष्ट्र-रूपधारी इन्द्र और गौतम ब्राह्मणके संवादका उल्लेख	४३५
१०३-	ब्रह्माजी और भगीरथका संवाद, यज्ञ, तप, दान आदिसे भी अनशन-व्रतकी विशेष महिमा	४४१
१०४-	आयुकी वृद्धि और क्षय करनेवाले शुभाशुभ कर्मोंके वर्णनसे गृहस्थाश्रमके कर्तव्योंका विस्तारपूर्वक निरूपण	४४५
१०५-	बड़े और छोटे भाईके पारस्परिक बर्ताव तथा माता-पिता, आचार्य आदि गुरुजनोंके गौरवका वर्णन	४५७
१०६-	मास, पक्ष एवं तिथिसम्बन्धी विभिन्न व्रतोपवासके फलका वर्णन	४५८
१०७-	दरिद्रोंके लिये यज्ञतुल्य फल देनेवाले उपवास-व्रत और उसके फलका विस्तारपूर्वक वर्णन	४६३
१०८-	मानस तथा पार्थिव तीर्थकी महत्ता	४७२
१०९-	प्रत्येक मासकी द्वादशी तिथिको उपवास और भगवान् विष्णुकी पूजा करनेका विशेष माहात्म्य	४७४
११०-	रूप-सौन्दर्य और लोकप्रियताकी प्राप्तिके लिये मार्गशीर्षमासमें चन्द्र-व्रत करनेका प्रतिपादन	४७५
१११-	बृहस्पतिका युधिष्ठिरसे प्राणियोंके जन्मके प्रकारका और नानाविध पापोंके फलस्वरूप नरकादिकी प्राप्ति एवं तिर्यग्योनियोंमें जन्म लेनेका वर्णन	४७६
११२-	पापसे छूटनेके उपाय तथा अन्न-दानकी विशेष महिमा	४८५
११३-	बृहस्पतिजीका युधिष्ठिरको अहिंसा एवं धर्मकी महिमा बताकर स्वर्गलोकको प्रस्थान	४८९
११४-	हिंसा और मांसभक्षणकी घोर निन्दा	४९०
११५-	मद्य और मांसके भक्षणमें महान् दोष, उनके त्यागकी महिमा एवं त्यागमें परम लाभका प्रतिपादन	४९१
११६-	मांस न खानेसे लाभ और अहिंसाधर्मकी प्रशंसा	४९७
११७-	शुभ कर्मसे एक कीड़ेको पूर्व-जन्मकी स्मृति होना और कीट-योनिमें भी मृत्युका भय एवं सुखकी अनुभूति बताकर कीड़ेका अपने कल्याणका उपाय पूछना	४९९

अध्याय	विषय	पृष्ठ-संख्या
११८-	कीड़ेका क्रमशः क्षत्रिययोनिमें जन्म लेकर व्यासजीका दर्शन करना और व्यासजीका उसे ब्राह्मण होने तथा स्वर्गसुख और अक्षय सुखकी प्राप्ति होनेका वरदान देना	५०१
११९-	कीड़ेका ब्राह्मणयोनिमें जन्म लेकर, ब्रह्मलोकमें जाकर सनातन ब्रह्मको प्राप्त करना	५०३
१२०-	व्यास और मैत्रेयका संवाद—दानकी प्रशंसा और कर्मका रहस्य	५०५
१२१-	व्यास-मैत्रेय-संवाद—विद्वान् एवं सदाचारी ब्राह्मणको अन्नदानकी प्रशंसा	५०७
१२२-	व्यास-मैत्रेय-संवाद—तपकी प्रशंसा तथा गृहस्थके उत्तम कर्तव्यका निर्देश	५०८
१२३-	शाण्डिली और सुमनाका संवाद—पतिव्रता स्त्रियोंके कर्तव्यका वर्णन	५१०
१२४-	नारदका पुण्डरीकको भगवान् नारायणकी आराधनाका उपदेश तथा उन्हें भगवद्धामकी प्राप्ति, सामगुणकी प्रशंसा, ब्राह्मणका राक्षसके सफेद और दुर्बल होनेका कारण बताना	५१३
१२५-	श्राद्धके विषयमें देवदूत और पितरोंका, पापोंसे छूटनेके विषयमें महर्षि विद्युत्प्रभ और इन्द्रका, धर्मके विषयमें इन्द्र और बृहस्पतिका तथा वृषोत्सर्ग आदिके विषयमें देवताओं, ऋषियों और पितरोंका संवाद	५२०
१२६-	विष्णु, बलदेव, देवगण, धर्म, अग्नि, विश्वामित्र, गोसमुदाय और ब्रह्माजीके द्वारा धर्मके गूढ़ रहस्यका वर्णन	५२६
१२७-	अग्नि, लक्ष्मी, अंगिरा, गार्ग्य, धौम्य तथा जमदग्निके द्वारा धर्मके रहस्यका वर्णन	५३०
१२८-	वायुके द्वारा धर्माधर्मके रहस्यका वर्णन	५३२
१२९-	लोमशद्वारा धर्मके रहस्यका वर्णन	५३३
१३०-	अरुन्धती, धर्मराज और चित्रगुप्तद्वारा धर्मसम्बन्धी रहस्यका वर्णन	५३४
१३१-	प्रमथगणोंके द्वारा धर्माधर्मसम्बन्धी रहस्यका कथन	५३७
१३२-	दिग्गजोंका धर्मसम्बन्धी रहस्य एवं प्रभाव	५३८
१३३-	महादेवजीका धर्मसम्बन्धी रहस्य	५३९
१३४-	स्कन्ददेवका धर्मसम्बन्धी रहस्य तथा भगवान् विष्णु और भीष्मजीके द्वारा माहात्म्यका वर्णन	५४०
१३५-	जिनका अन्न ग्रहण करने योग्य है और जिनका ग्रहण करने योग्य नहीं है, उन मनुष्योंका वर्णन	५४१
१३६-	दान लेने और अनुचित भोजन करनेका प्रायश्चित्त	५४३
१३७-	दानसे स्वर्गलोकमें जानेवाले राजाओंका वर्णन	५४५
१३८-	पाँच प्रकारके दानोंका वर्णन	५४७
१३९-	तपस्वी श्रीकृष्णके पास ऋषियोंका आना, उनका प्रभाव देखना और उनसे वार्तालाप करना	५४८
१४०-	नारदजीके द्वारा हिमालय पर्वतपर भूतगणोंके सहित शिवजीकी शोभाका विस्तृत वर्णन, पार्वतीका आगमन, शिवजीकी दोनों आँखोंको अपने हाथोंसे बंद करना और तीसरे नेत्रका प्रकट होना, हिमालयका भस्म होना और पुनः प्राकृत अवस्थामें हो जाना तथा शिव-पार्वतीके धर्मविषयक संवादकी उत्थापना	५५३
१४१-	शिव-पार्वतीका धर्मविषयक संवाद—वर्णाश्रमधर्मसम्बन्धी आचार एवं प्रवृत्ति-निवृत्तिरूप धर्मका निरूपण	५५७
१४२-	उमा-महेश्वर-संवाद, वानप्रस्थ धर्म तथा उसके पालनकी विधि और महिमा	५७३
१४३-	ब्राह्मणादि वर्णोंकी प्राप्तिमें मनुष्यके शुभाशुभ कर्मोंकी प्रधानताका प्रतिपादन	५८०
१४४-	बन्धन-मुक्ति, स्वर्ग, नरक एवं दीर्घायु और अल्पायु प्रदान करनेवाले शरीर, वाणी और मनद्वारा किये जानेवाले शुभाशुभ कर्मोंका वर्णन	५८४
१४५-	स्वर्ग और नरक तथा उत्तम और अधम कुलमें जन्मकी प्राप्ति करानेवाले कर्मोंका वर्णन	५८८
	१. राजधर्मका वर्णन	५९२
	२. योद्धाओंके धर्मका वर्णन तथा रणयज्ञमें प्राणोत्सर्गकी महिमा	५९६

अध्याय	विषय	पृष्ठ-संख्या
३.	संक्षेपसे राजधर्मका वर्णन	५९८
४.	अहिंसाकी और इन्द्रिय-संयमकी प्रशंसा तथा दैवकी प्रधानता	६००
५.	त्रिवर्गका निरूपण तथा कल्याणकारी आचार-व्यवहारका वर्णन	६०१
६.	विविध प्रकारके कर्मफलोंका वर्णन	६०४
७.	अन्धत्व और पंगुत्व आदि नाना प्रकारके दोषों और रोगोंके कारणभूत दुष्कर्मोंका वर्णन	६१०
८.	उमा-महेश्वर-संवादमें कितने ही महत्त्वपूर्ण विषयोंका विवेचन	६१५
९.	प्राणियोंके चार भेदोंका निरूपण, पूर्वजन्मकी स्मृतिका रहस्य, मरकर फिर लौटनेमें कारण स्वप्नदर्शन, दैव और पुरुषार्थ तथा पुनर्जन्मका विवेचन	६२२
१०.	यमलोक तथा वहाँके मार्गोंका वर्णन, पापियोंकी नरकयातनाओं तथा कर्मानुसार विभिन्न योनियोंमें उनके जन्मका उल्लेख	६२७
११.	शुभाशुभ मानस आदि तीन प्रकारके कर्मोंका स्वरूप और उनके फलका एवं मद्यसेवनके दोषोंका वर्णन, आहार-शुद्धि, मांस-भक्षणसे दोष, मांस न खानेसे लाभ, जीवदयाके महत्त्व, गुरुपूजाकी विधि, उपवास-विधि, ब्रह्मचर्य पालन, तीर्थचर्चा, सर्वसाधारण द्रव्यके दानसे पुण्य, अन्न, सुवर्ण, गौ, भूमि, कन्या और विद्यादानका माहात्म्य, पुण्यतम देशकाल, दिये हुए दान और धर्मकी निष्फलता, विविध प्रकारके दान, लौकिक-वैदिक यज्ञ तथा देवताओंकी पूजाका निरूपण	६३२
१२.	श्राद्ध विधान आदिका वर्णन, दानकी त्रिविधतासे उसके फलकी भी त्रिविधताका उल्लेख, दानके पाँच फल, नाना प्रकारके धर्म और उनके फलोंका प्रतिपादन	६५१
१३.	प्राणियोंकी शुभ और अशुभ गतिका निश्चय करानेवाले लक्षणोंका वर्णन, मृत्युके दो भेद और यत्नसाध्य-मृत्युके चार भेदोंका कथन, कर्तव्य पालनपूर्वक शरीर त्यागका महान् फल और काम, क्रोध आदिद्वारा देह त्याग करनेसे नरककी प्राप्ति	६५५
१४.	मोक्षधर्मकी श्रेष्ठताका प्रतिपादन, मोक्ष साधक ज्ञानकी प्राप्तिका उपाय और मोक्षकी प्राप्तिमें वैराग्यकी प्रधानता	६५९
१५.	सांख्यज्ञानका प्रतिपादन करते हुए अव्यक्तादि चौबीस तत्त्वोंकी उत्पत्ति आदिका वर्णन	६६५
१६.	योगधर्मका प्रतिपादनपूर्वक उसके फलका वर्णन	६६९
१७.	पाशुपत योगका वर्णन तथा शिवलिंग-पूजनका माहात्म्य	६७२
१४६-	पार्वतीजीके द्वारा स्त्री-धर्मका वर्णन	६७४
१४७-	वंशपरम्पराका कथन और भगवान् श्रीकृष्णके माहात्म्यका वर्णन	६७९
१४८-	भगवान् श्रीकृष्णकी महिमाका वर्णन और भीष्मजीका युधिष्ठिरको राज्य करनेके लिये आदेश देना	६८४
१४९-	श्रीविष्णुसहस्रनामस्तोत्रम्	६८९
१५०-	जपनेयोग्य मन्त्र और सबेरे-शाम कीर्तन करनेयोग्य देवता, ऋषियों और राजाओंके मंगलमय नामोंका कीर्तन-माहात्म्य तथा गायत्री-जपका फल	७०८
१५१-	ब्राह्मणोंकी महिमाका वर्णन	७१३
१५२-	कार्तवीर्य अर्जुनको दत्तात्रेयजीसे चार वरदान प्राप्त होनेका एवं उनमें अभिमानकी उत्पत्तिका वर्णन तथा ब्राह्मणोंकी महिमाके विषयमें कार्तवीर्य अर्जुन और वायुदेवताके संवादका उल्लेख	७१५
१५३-	वायुद्वारा उदाहरणसहित ब्राह्मणोंकी महत्ताका वर्णन	७१८
१५४-	ब्राह्मणशिरोमणि उतथ्यके प्रभावका वर्णन	७२०

अध्याय	विषय	पृष्ठ-संख्या
१५५-	ब्रह्मर्षि अगस्त्य और वसिष्ठके प्रभावका वर्णन	७२२
१५६-	अत्रि और च्यवन ऋषिके प्रभावका वर्णन	७२४
१५७-	कप नामक दानवोंके द्वारा स्वर्गलोकपर अधिकार जमा लेनेपर ब्राह्मणोंका कपोंको भस्म कर देना, वायुदेव और कार्तवीर्य अर्जुनके संवादका उपसंहार	७२७
१५८-	भीष्मजीके द्वारा भगवान् श्रीकृष्णकी महिमाका वर्णन	७२९
१५९-	श्रीकृष्णका प्रद्युम्नको ब्राह्मणोंकी महिमा बताते हुए दुर्वासाके चरित्रका वर्णन करना और यह सारा प्रसंग युधिष्ठिरको सुनाना	७३४
१६०-	श्रीकृष्णद्वारा भगवान् शंकरके माहात्म्यका वर्णन	७३८
१६१-	भगवान् शंकरके माहात्म्यका वर्णन	७४१
१६२-	धर्मके विषयमें आगम-प्रमाणकी श्रेष्ठता, धर्माधर्मके फल, साधु-असाधुके लक्षण तथा शिष्टाचारका निरूपण	७४३
१६३-	युधिष्ठिरका विद्या, बल और बुद्धिकी अपेक्षा भाग्यकी प्रधानता बताना और भीष्मजीद्वारा उसका उत्तर	७४८
१६४-	भीष्मका शुभाशुभ कर्मोंको ही सुख-दुःखकी प्राप्तिमें कारण बताते हुए धर्मके अनुष्ठानपर जोर देना	७४९
१६५-	नित्य स्मरणीय देवता, नदी, पर्वत, ऋषि और राजाओंके नाम-कीर्तनका माहात्म्य	७५१
१६६-	भीष्मकी अनुमति पाकर युधिष्ठिरका सपरिवार हस्तिनापुरको प्रस्थान	७५४
	(भीष्मस्वर्गारोहणपर्व)	
१६७-	भीष्मके अन्त्येष्टि-संस्कारकी सामग्री लेकर युधिष्ठिर आदिका उनके पास जाना और भीष्मका श्रीकृष्ण आदिसे देह-त्यागकी अनुमति लेते हुए धृतराष्ट्र और युधिष्ठिरको कर्तव्यका उपदेश देना	७५७
१६८-	भीष्मजीका प्राणत्याग, धृतराष्ट्र आदिके द्वारा उनका दाह-संस्कार, कौरवोंका गंगाके जलसे भीष्मको जलांजलि देना, गंगाजीका प्रकट होकर पुत्रके लिये शोक करना और श्रीकृष्णका उन्हें समझाना	७६१

आश्वमेधिकपर्व

	विषय	पृष्ठ-संख्या
	(अश्वमेधपर्व)	
१-	युधिष्ठिरका शोकमग्न होकर गिरना और धृतराष्ट्रका उन्हें समझाना	७६५
२-	श्रीकृष्ण और व्यासजीका युधिष्ठिरको समझाना	७६६
३-	व्यासजीका युधिष्ठिरको अश्वमेध यज्ञके लिये धनकी प्राप्तिका उपाय बताते हुए संवर्त और मरुत्तका प्रसंग उपस्थित करना	७६८
४-	मरुत्तके पूर्वजोंका परिचय देते हुए व्यासजीके द्वारा उनके गुण, प्रभाव एवं यज्ञका दिग्दर्शन	७७०
५-	इन्द्रकी प्रेरणासे बृहस्पतिजीका मनुष्यको यज्ञ न करानेकी प्रतिज्ञा करना	७७२
६-	नारदजीकी आज्ञासे मरुत्तका उनकी बतायी हुई युक्तिके अनुसार संवर्तसे भेंट करना	७७४
७-	संवर्त और मरुत्तकी बातचीत, मरुत्तके विशेष आग्रहपर संवर्तका यज्ञ करानेकी स्वीकृति देना	७७७
८-	संवर्तका मरुत्तको सुवर्णकी प्राप्तिके लिये महादेवजीकी नाममयी स्तुतिका उपदेश और धनकी प्राप्ति तथा मरुत्तकी सम्पत्तिसे बृहस्पतिका चिन्तित होना	७८०
९-	बृहस्पतिका इन्द्रसे अपनी चिन्ताका कारण बताना, इन्द्रकी आज्ञासे अग्निदेवका मरुत्तके पास उनका संदेश लेकर जाना और संवर्तके भयसे पुनः लौटकर इन्द्रसे ब्रह्मबलकी श्रेष्ठता बताना	७८३
१०-	इन्द्रका गन्धर्वराजको भेजकर मरुत्तको भय दिखाना और संवर्तका मन्त्र-बलसे इन्द्रसहित सब देवताओंको बुलाकर मरुत्तका यज्ञ पूर्ण करना	७८८

अध्याय	विषय	पृष्ठ-संख्या
११-	श्रीकृष्णका युधिष्ठिरको इन्द्रद्वारा शरीरस्थ वृत्रासुरका संहार करनेका इतिहास सुनाकर समझाना	७९२
१२-	भगवान् श्रीकृष्णका युधिष्ठिरको मनपर विजय करनेके लिये आदेश	७९४
१३-	श्रीकृष्णद्वारा ममताके त्यागका महत्त्व, काम-गीताका उल्लेख और युधिष्ठिरको यज्ञके लिये प्रेरणा करना	७९५
१४-	ऋषियोंका अन्तर्धान होना, भीष्म आदिका श्राद्ध करके युधिष्ठिर आदिका हस्तिनापुरमें जाना तथा युधिष्ठिरके धर्म-राज्यका वर्णन	७९७
१५-	भगवान् श्रीकृष्णका अर्जुनसे द्वारका जानेका प्रस्ताव करना	८००
	(अनुगीतापर्व)	
१६-	अर्जुनका श्रीकृष्णसे गीताका विषय पूछना और श्रीकृष्णका अर्जुनसे सिद्ध, महर्षि एवं काश्यपका संवाद सुनाना	८०३
१७-	काश्यपके प्रश्नोंके उत्तरमें सिद्ध महात्माद्वारा जीवकी विविध गतियोंका वर्णन	८०६
१८-	जीवके गर्भ-प्रवेश, आचार-धर्म, कर्म-फलकी अनिवार्यता तथा संसारसे तरनेके उपायका वर्णन	८०९
१९-	गुरु-शिष्यके संवादमें मोक्षप्राप्तिके उपायका वर्णन	८१२
२०-	ब्राह्मणगीता—एक ब्राह्मणका अपनी पत्नीसे ज्ञानयज्ञका उपदेश करना	८१६
२१-	दस होताओंसे सम्पन्न होनेवाले यज्ञका वर्णन तथा मन और वाणीकी श्रेष्ठताका प्रतिपादन	८१९
२२-	मन-बुद्धि और इन्द्रियरूप सप्त होताओंका, यज्ञ तथा मन-इन्द्रिय-संवादका वर्णन	८२१
२३-	प्राण, अपान आदिका संवाद और ब्रह्माजीका सबकी श्रेष्ठता बतलाना	८२३
२४-	देवर्षि नारद और देवमतका संवाद एवं उदानके उत्कृष्ट रूपका वर्णन	८२६
२५-	चातुर्होम यज्ञका वर्णन	८२७
२६-	अन्तर्यामीकी प्रधानता	८२९
२७-	अध्यात्मविषयक महान् वनका वर्णन	८३०
२८-	ज्ञानी पुरुषकी स्थिति तथा अध्वर्यु और यतिका संवाद	८३२
२९-	परशुरामजीके द्वारा क्षत्रिय-कुलका संहार	८३५
३०-	अलर्कके ध्यान-योगका उदाहरण देकर पितामहोंका परशुरामजीको समझाना और परशुरामजीका तपस्याके द्वारा सिद्धि प्राप्त करना	८३७
३१-	राजा अम्बरीषकी गायी हुई आध्यात्मिक स्वराज्यविषयक गाथा	८४०
३२-	ब्राह्मण-रूपधारी धर्म और जनकका ममत्वत्याग विषयक संवाद	८४१
३३-	ब्राह्मणका पत्नीके प्रति अपने ज्ञाननिष्ठ स्वरूपका परिचय देना	८४३
३४-	भगवान् श्रीकृष्णके द्वारा ब्राह्मण, ब्राह्मणी और क्षेत्रज्ञका रहस्य बतलाते हुए ब्राह्मण-गीताका उपसंहार	८४४
३५-	श्रीकृष्णके द्वारा अर्जुनसे मोक्ष-धर्मका वर्णन—गुरु और शिष्यके संवादमें ब्रह्मा और महर्षियोंके प्रश्नोत्तर	८४५
३६-	ब्रह्माजीके द्वारा तमोगुणका, उसके कार्यका और फलका वर्णन	८४९
३७-	रजोगुणके कार्यका वर्णन और उसके जाननेका फल	८५२
३८-	सत्त्वगुणके कार्यका वर्णन और उसके जाननेका फल	८५३
३९-	सत्त्व आदि गुणोंका और प्रकृतिके नामोंका वर्णन	८५४
४०-	महत्तत्त्वके नाम और परमात्मतत्त्वको जाननेकी महिमा	८५६
४१-	अहंकारकी उत्पत्ति और उसके स्वरूपका वर्णन	८५७
४२-	अहंकारसे पंच महाभूतों और इन्द्रियोंकी सृष्टि, अध्यात्म, अधिभूत और अधिदैवतका वर्णन तथा निवृत्तिमार्गका उपदेश	८५८
४३-	चराचर प्राणियोंके अधिपतियोंका, धर्म आदिके लक्षणोंका और विषयोंकी अनुभूतिके साधनोंका वर्णन तथा क्षेत्रज्ञकी विलक्षणता	८६२
४४-	सब पदार्थोंके आदि-अन्तका और ज्ञानकी नित्यताका वर्णन	८६५

अध्याय	विषय	पृष्ठ-संख्या
४५-	देहरूपी कालचक्रका तथा गृहस्थ और ब्राह्मणके धर्मका कथन	८६६
४६-	ब्रह्मचारी, वानप्रस्थी और संन्यासीके धर्मका वर्णन	८६८
४७-	मुक्तिके साधनोंका, देहरूपी वृक्षका तथा ज्ञान-खड्गसे उसे काटनेका वर्णन	८७२
४८-	आत्मा और परमात्माके स्वरूपका विवेचन	८७४
४९-	धर्मका निर्णय जाननेके लिये ऋषियोंका प्रश्न	८७५
५०-	सत्त्व और पुरुषकी भिन्नता, बुद्धिमान्‌की प्रशंसा, पंचभूतोंके गुणोंका विस्तार और परमात्माकी श्रेष्ठताका वर्णन	८७६
५१-	तपस्याका प्रभाव, आत्माका स्वरूप और उसके ज्ञानकी महिमा तथा अनुगीताका उपसंहार	८८१
५२-	श्रीकृष्णका अर्जुनके साथ हस्तिनापुर जाना और वहाँ सबसे मिलकर युधिष्ठिरकी आज्ञा ले सुभद्राके साथ द्वारकाको प्रस्थान करना	८८५
५३-	मार्गमें श्रीकृष्णसे कौरवोंके विनाशकी बात सुनकर उत्तंकमुनिका कुपित होना और श्रीकृष्णका उन्हें शान्त करना	८८९
५४-	भगवान् श्रीकृष्णका उत्तंकसे अध्यात्मतत्त्वका वर्णन करना तथा दुर्योधनके अपराधको कौरवोंके विनाशका कारण बतलाना	८९१
५५-	श्रीकृष्णका उत्तंक मुनिको विश्वरूपका दर्शन कराना और मरुदेशमें जल प्राप्त होनेका वरदान देना	८९४
५६-	उत्तंककी गुरुभक्तिका वर्णन, गुरुपुत्रीके साथ उत्तंकका विवाह, गुरुपत्नीकी आज्ञासे दिव्यकुण्डल लानेके लिये उत्तंकका राजा सौदासके पास जाना	८९७
५७-	उत्तंकका सौदाससे उनकी रानीके कुण्डल माँगना और सौदासके कहनेसे रानी मदयन्तीके पास जाना	९००
५८-	कुण्डल लेकर उत्तंकका लौटना, मार्गमें उन कुण्डलोंका अपहरण होना तथा इन्द्र और अग्निदेवकी कृपासे फिर उन्हें पाकर गुरुपत्नीको देना	९०२
५९-	भगवान् श्रीकृष्णका द्वारकामें जाकर रैवतक पर्वतपर महोत्सवमें सम्मिलित होना और सबसे मिलना	९०८
६०-	वसुदेवजीके पूछनेपर श्रीकृष्णका उन्हें महाभारत-युद्धका वृत्तान्त संक्षेपसे सुनाना	९११
६१-	श्रीकृष्णका सुभद्राके कहनेसे वसुदेवजीको अभिमन्युवधका वृत्तान्त सुनाना	९१४
६२-	वसुदेव आदि यादवोंका अभिमन्युके निमित्त श्राद्ध करना तथा व्यासजीका उत्तरा और अर्जुनको समझाकर युधिष्ठिरको अश्वमेधयज्ञ करनेकी आज्ञा देना	९१६
६३-	युधिष्ठिरका अपने भाइयोंके साथ परामर्श करके सबको साथ ले धन ले आनेके लिये प्रस्थान करना	९१८
६४-	पाण्डवोंका हिमालयपर पहुँचकर वहाँ पड़ाव डालना और रातमें उपवासपूर्वक निवास करना	९२०
६५-	ब्राह्मणोंकी आज्ञासे भगवान् शिव और उनके पार्षद आदिकी पूजा करके युधिष्ठिरका उस धनराशिको खुदवाकर अपने साथ ले जाना	९२२
६६-	श्रीकृष्णका हस्तिनापुरमें आगमन और उत्तराके मृत बालकको जिलानेके लिये कुन्तीकी उनसे प्रार्थना	९२४
६७-	परीक्षित्‌को जिलानेके लिये सुभद्राकी श्रीकृष्णसे प्रार्थना	९२६
६८-	श्रीकृष्णका प्रसूतिकागृहमें प्रवेश, उत्तराका विलाप और अपने पुत्रको जीवित करनेके लिये प्रार्थना	९२७
६९-	उत्तराका विलाप और भगवान् श्रीकृष्णका उसके मृत बालकको जीवन-दान देना	९२९
७०-	श्रीकृष्णद्वारा राजा परीक्षित्‌का नामकरण तथा पाण्डवोंका हस्तिनापुरके समीप आगमन	९३१
७१-	भगवान् श्रीकृष्ण और उनके साथियोंद्वारा पाण्डवोंका स्वागत, पाण्डवोंका नगरमें आकर सबसे मिलना और व्यासजी तथा श्रीकृष्णका युधिष्ठिरको यज्ञके लिये आज्ञा देना	९३२

अध्याय	विषय	पृष्ठ-संख्या
७२-	व्यासजीकी आज्ञासे अश्वकी रक्षाके लिये अर्जुनकी, राज्य और नगरकी रक्षाके लिये भीमसेन और नकुलकी तथा कुटुम्ब-पालनके लिये सहदेवकी नियुक्ति	९३४
७३-	सेनासहित अर्जुनके द्वारा अश्वका अनुसरण	९३६
७४-	अर्जुनके द्वारा त्रिगर्तोंकी पराजय	९३९
७५-	अर्जुनका प्राग्ज्योतिषपुरके राजा वज्रदत्तके साथ युद्ध	९४२
७६-	अर्जुनके द्वारा वज्रदत्तकी पराजय	९४३
७७-	अर्जुनका सैन्धवोंके साथ युद्ध	९४५
७८-	अर्जुनका सैन्धवोंके साथ युद्ध और दुःशलाके अनुरोधसे उसकी समाप्ति	९४८
७९-	अर्जुन और बभ्रुवाहनका युद्ध एवं अर्जुनकी मृत्यु	९५१
८०-	चित्रांगदाका विलाप, मूर्च्छासे जगनेपर बभ्रुवाहनका शोकोद्गार और उलूपीके प्रयत्नसे संजीवनीमणिके द्वारा अर्जुनका पुनः जीवित होना	९५४
८१-	उलूपीका अर्जुनके पूछनेपर अपने आगमनका कारण एवं अर्जुनकी पराजयका रहस्य बताना, पुत्र और पत्नीसे विदा लेकर पार्थका पुनः अश्वके पीछे जाना	९५८
८२-	मगधराज मेघसन्धिकी पराजय	९६२
८३-	दक्षिण और पश्चिम समुद्रके तटवर्ती देशोंमें होते हुए अश्वका द्वारका, पंचनद एवं गान्धार देशमें प्रवेश	९६४
८४-	शकुनिपुत्रकी पराजय	९६६
८५-	यज्ञभूमिकी तैयारी, नाना देशोंसे आये हुए राजाओंका यज्ञकी सजावट और आयोजन देखना	९६७
८६-	राजा युधिष्ठिरका भीमसेनको राजाओंकी पूजा करनेका आदेश और श्रीकृष्णका युधिष्ठिरसे अर्जुनका संदेश कहना	९७०
८७-	अर्जुनके विषयमें श्रीकृष्ण और युधिष्ठिरकी बातचीत, अर्जुनका हस्तिनापुरमें जाना तथा उलूपी और चित्रांगदाके साथ बभ्रुवाहनका आगमन	९७२
८८-	उलूपी और चित्रांगदाके सहित बभ्रुवाहनका रत्न-आभूषण आदिसे सत्कार तथा अश्वमेधयज्ञका आरम्भ	९७४
८९-	युधिष्ठिरका ब्राह्मणोंको दक्षिणा देना और राजाओंको भेंट देकर विदा करना	९७७
९०-	युधिष्ठिरके यज्ञमें एक नेवलेका उञ्छ-वृत्तिधारी ब्राह्मणके द्वारा किये गये सेरभर सत्तूदानकी महिमा उस अश्वमेधयज्ञसे भी बढ़कर बतलाना	९८१
९१-	हिंसामिश्रित यज्ञ और धर्मकी निन्दा	९९०
९२-	महर्षि अगस्त्यके यज्ञकी कथा	९९३
	(वैष्णवधर्मपर्व)	
१-	युधिष्ठिरका वैष्णवधर्मविषयक प्रश्न और भगवान् श्रीकृष्णके द्वारा धर्मका तथा अपनी महिमाका वर्णन	९९७
२-	चारों वर्णोंके कर्म और उनके फलोंका वर्णन तथा धर्मकी वृद्धि और पापके क्षय होनेका उपाय	१००१
३-	व्यर्थ जन्म, दान और जीवनका वर्णन, सात्त्विक दानोंका लक्षण, दानका योग्य पात्र और ब्राह्मणकी महिमा	१००४
४-	बीज और योनिकी शुद्धि तथा गायत्री-जपकी और ब्राह्मणोंकी महिमाका और उनके तिरस्कारके भयानक फलका वर्णन	१०१०
५-	यमलोकके मार्गका कष्ट और उससे बचनेके उपाय	१०१४
६-	जल-दान, अन्न-दान और अतिथि-सत्कारका माहात्म्य	१०१९
७-	भूमिदान, तिलदान और उत्तम ब्राह्मणकी महिमा	१०२४
८-	अनेक प्रकारके दानोंकी महिमा	१०२७
९-	पंचमहायज्ञ, विधिवत् स्नान और उसके अंगभूत कर्म, भगवान्‌के प्रिय पुष्प तथा भगवद्भक्तोंका वर्णन	१०३१
१०-	कपिला गौका तथा उसके दानका माहात्म्य और कपिला गौके दस भेद	१०३८
११-	कपिला गौमें देवताओंके निवासस्थानका तथा उसके माहात्म्यका, अयोग्य ब्राह्मणका, नरकमें ले जानेवाले पापोंका तथा स्वर्गमें ले जानेवाले पुण्योंका वर्णन	१०४१
१२-	ब्रह्महत्याके समान पापका, अन्नदानकी प्रशंसाका, जिनका अन्न वर्जनीय है, उन पापियोंका, दानके फलका और धर्मकी प्रशंसाका वर्णन	१०४६
१३-	धर्म और शौचके लक्षण, संन्यासी और अतिथिके सत्कारके उपदेश, शिष्टाचार, दानपात्र ब्राह्मण तथा अन्नदानकी प्रशंसा	१०४८
१४-	भोजनकी विधि, गौओंको घास डालनेका विधान और तिलका माहात्म्य तथा ब्राह्मणके लिये तिल और गन्ना पेरनेका निषेध	१०५१
१५-	आपद्धर्म, श्रेष्ठ और निन्द्य ब्राह्मण, श्राद्धका उत्तमकाल और मानव-धर्म-सारका वर्णन	१०५३

अध्याय	विषय	पृष्ठ-संख्या
१६-	अग्निके स्वरूपमें अग्निहोत्रकी विधि तथा उसके माहात्म्यका वर्णन	१०५८
१७-	चान्द्रायणव्रतकी विधि, प्रायश्चित्तरूपमें उसके करनेका विधान तथा महिमाका वर्णन	१०६१
१८-	सर्वहितकारी धर्मका वर्णन, द्वादशीव्रतका माहात्म्य तथा युधिष्ठिरके द्वारा भगवान्‌की स्तुति	१०६४
१९-	विषुवयोग और ग्रहण आदिमें दानकी महिमा, पीपलका महत्त्व, तीर्थभूत गुणोंकी प्रशंसा और उत्तम प्रायश्चित्त	१०६८
२०-	उत्तम और अधम ब्राह्मणोंके लक्षण, भक्त, गौ और पीपलकी महिमा	१०७२
२१-	भगवान्‌के उपदेशका उपसंहार और द्वारकागमन	१०७४

आश्रमवासिकपर्व

	(आश्रमवासपर्व)	
१-	भाइयोंसहित युधिष्ठिर तथा कुन्ती आदि देवियोंके द्वारा धृतराष्ट्र और गान्धारीकी सेवा	१०७९
२-	पाण्डवोंका धृतराष्ट्र और गान्धारीके अनुकूल बर्ताव	१०८१
३-	राजा धृतराष्ट्रका गान्धारीके साथ वनमें जानेके लिये उद्योग एवं युधिष्ठिरसे अनुमति देनेके लिये अनुरोध तथा युधिष्ठिर और कुन्ती आदिका दुःखी होना	१०८३
४-	व्यासजीके समझानेसे युधिष्ठिरका धृतराष्ट्रको वनमें जानेके लिये अनुमति देना	१०८९
५-	धृतराष्ट्रके द्वारा युधिष्ठिरको राजनीतिका उपदेश	१०९१
६-	धृतराष्ट्रद्वारा राजनीतिका उपदेश	१०९४
७-	युधिष्ठिरको धृतराष्ट्रके द्वारा राजनीतिका उपदेश	१०९६
८-	धृतराष्ट्रका कुरुजांगल देशकी प्रजासे वनमें जानेके लिये आज्ञा माँगना	१०९८
९-	प्रजाजनोंसे धृतराष्ट्रकी क्षमा-प्रार्थना	११००
१०-	प्रजाकी ओरसे साम्बनामक ब्राह्मणका धृतराष्ट्रको सान्त्वनापूर्ण उत्तर देना	११०१
११-	धृतराष्ट्रका विदुरके द्वारा युधिष्ठिरसे श्राद्धके लिये धन माँगना, अर्जुनकी सहमति और भीमसेनका विरोध	११०५
१२-	अर्जुनका भीमको समझाना और युधिष्ठिरका धृतराष्ट्रको यथेष्ट धन देनेकी स्वीकृति प्रदान करना	११०७
१३-	विदुरका धृतराष्ट्रको युधिष्ठिरका उदारतापूर्ण उत्तर सुनाना	११०८
१४-	राजा धृतराष्ट्रके द्वारा मृत व्यक्तियोंके लिये श्राद्ध एवं विशाल दान-यज्ञका अनुष्ठान	११०९
१५-	गान्धारीसहित धृतराष्ट्रका वनको प्रस्थान	१११११
१६-	धृतराष्ट्रका पुरवासियोंको लौटाना और पाण्डवोंके अनुरोध करनेपर भी कुन्तीका वनमें जानेसे न रुकना	१११२
१७-	कुन्तीका पाण्डवोंको उनके अनुरोधका उत्तर	१११५

अध्याय	विषय	पृष्ठ-संख्या
१८-	पाण्डवोंका स्त्रियोंसहित निराश लौटना, कुन्तीसहित गान्धारी और धृतराष्ट्र आदिका मार्गमें गंगा-तटपर निवास करना	१११६
१९-	धृतराष्ट्र आदिका गंगातटपर निवास करके वहाँसे कुरुक्षेत्रमें जाना और शतयूपके आश्रमपर निवास करना	१११८
२०-	नारदजीका प्राचीन राजर्षियोंकी तपः सिद्धिका दृष्टान्त देकर धृतराष्ट्रकी तपस्याविषयक श्रद्धाको बढ़ाना तथा शतयूपके पूछनेपर धृतराष्ट्रको मिलनेवाली गतिका भी वर्णन करना	११२०
२१-	धृतराष्ट्र आदिके लिये पाण्डवों तथा पुरवासियोंकी चिन्ता	११२२
२२-	माताके लिये पाण्डवोंकी चिन्ता, युधिष्ठिरकी वनमें जानेकी इच्छा, सहदेव और द्रौपदीका साथ जानेका उत्साह तथा रनिवास और सेनासहित युधिष्ठिरका वनको प्रस्थान	११२४
२३-	सेनासहित पाण्डवोंकी यात्रा और उनका कुरुक्षेत्रमें पहुँचना	११२६
२४-	पाण्डवों तथा पुरवासियोंका कुन्ती, गान्धारी और धृतराष्ट्रके दर्शन करना	११२७
२५-	संजयका ऋषियोंसे पाण्डवों, उनकी पत्नियों तथा अन्यान्य स्त्रियोंका परिचय देना	११२९
२६-	धृतराष्ट्र और युधिष्ठिरकी बातचीत तथा विदुरजीका युधिष्ठिरके शरीरमें प्रवेश	११३१
२७-	युधिष्ठिर आदिका ऋषियोंके आश्रम देखना, कलश आदि बाँटना और धृतराष्ट्रके पास आकर बैठना, उन सबके पास अन्यान्य ऋषियोंसहित महर्षि व्यासका आगमन	११३५
२८-	महर्षि व्यासका धृतराष्ट्रसे कुशल पूछते हुए विदुर और युधिष्ठिरकी धर्मरूपताका प्रतिपादन करना और उनसे अभीष्ट वस्तु माँगनेके लिये कहना	११३७
	(पुत्रदर्शनपर्व)	
२९-	धृतराष्ट्रका मृत बान्धवोंके शोकसे दुःखी होना तथा गान्धारी और कुन्तीका व्यासजीसे अपने मरे हुए पुत्रोंके दर्शन करनेका अनुरोध	११३९
३०-	कुन्तीका कर्णके जन्मका गुप्त रहस्य बताना और व्यासजीका उन्हें सान्त्वना देना	११४२
३१-	व्यासजीके द्वारा धृतराष्ट्र आदिके पूर्वजन्मका परिचय तथा उनके कहनेसे सब लोगोंका गंगा-तटपर जाना	११४४
३२-	व्यासजीके प्रभावसे कुरुक्षेत्रके युद्धमें मारे गये कौरव-पाण्डववीरोंका गंगाजीके जलसे प्रकट होना	११४६
३३-	परलोकसे आये हुए व्यक्तियोंका परस्पर राग-द्वेषसे रहित होकर मिलना और रात बीतनेपर अदृश्य हो जाना, व्यासजीकी आज्ञासे विधवा क्षत्राणियोंका गंगाजीमें गोता लगाकर अपने-अपने पतिके लोकको प्राप्त करना तथा इस पर्वके श्रवणकी महिमा	११४९
३४-	मरे हुए पुरुषोंका अपने पूर्व शरीरसे ही यहाँ पुनः दर्शन देना कैसे सम्भव है, जनमेजयकी इस शंकाका वैशम्पायनद्वारा समाधान	११५१
३५-	व्यासजीकी कृपासे जनमेजयको अपने पिताका दर्शन प्राप्त होना	११५३
३६-	व्यासजीकी आज्ञासे धृतराष्ट्र आदिका पाण्डवोंको विदा करना और पाण्डवोंका सदलबल हस्तिनापुरमें आना	११५४
	(नारदागमनपर्व)	
३७-	नारदजीसे धृतराष्ट्र आदिके दावानलमें दग्ध हो जानेका हाल जानकर युधिष्ठिर आदिका शोक करना	११५८
३८-	नारदजीके सम्मुख युधिष्ठिरका धृतराष्ट्र आदिके लौकिक अग्निमें दग्ध हो जानेका वर्णन करते हुए विलाप और अन्य पाण्डवोंका भी रोदन	११६२
३९-	राजा युधिष्ठिरद्वारा धृतराष्ट्र, गान्धारी और कुन्ती—इन तीनोंकी हड्डियोंको गंगामें प्रवाहित कराना तथा श्राद्धकर्म करना	११६३

अध्याय	विषय	पृष्ठ-संख्या
	मौसलपर्व	
१-	युधिष्ठिरका अपशकुन देखना, यादवोंके विनाशका समाचार सुनना, द्वारकामें ऋषियोंके शापवश साम्बके पेटसे मूसलकी उत्पत्ति तथा मदिराके निषेधकी कठोर आज्ञा	११६७
२-	द्वारकामें भयंकर उत्पात देखकर भगवान् श्रीकृष्णका यदुवंशियोंको तीर्थयात्राके लिये आदेश देना	११६९
३-	कृतवर्मा आदि समस्त यादवोंका परस्पर संहार	११७१
४-	दारुकका अर्जुनको सूचना देनेके लिये हस्तिनापुर जाना, बभ्रुका देहावसान एवं बलराम और श्रीकृष्णका परमधाम-गमन	११७५
५-	अर्जुनका द्वारकामें आना और द्वारका तथा श्रीकृष्ण-पत्नियोंकी दशा देखकर दुःखी होना	११७८
६-	द्वारकामें अर्जुन और वसुदेवजीकी बातचीत	११८०
७-	वसुदेवजी तथा मौसलयुद्धमें मरे हुए यादवोंका अन्त्येष्टि-संस्कार करके अर्जुनका द्वारकावासी स्त्री-पुरुषोंको अपने साथ ले जाना, समुद्रका द्वारकाको डूबो देना और मार्गमें अर्जुनपर डाकुओंका आक्रमण, अवशिष्ट यादवोंको अपनी राजधानीमें बसा देना	११८३
८-	अर्जुन और व्यासजीकी बातचीत	११८८
	महाप्रस्थानिकपर्व	
१-	वृष्णिवंशियोंका श्राद्ध करके प्रजाजनोंकी अनुमति ले द्रौपदीसहित पाण्डवोंका महाप्रस्थान	११९३
२-	मार्गमें द्रौपदी, सहदेव, नकुल, अर्जुन, और भीमसेनका गिरना तथा युधिष्ठिरद्वारा प्रत्येकके गिरनेका कारण बताया जाना	११९६
३-	युधिष्ठिर इन्द्र और धर्म आदिके साथ वार्तालाप, युधिष्ठिरका अपने धर्ममें दृढ़ रहना तथा सदेह स्वर्गमें जाना	११९८
	स्वर्गारोहणपर्व	
१-	स्वर्गमें नारद और युधिष्ठिरकी बातचीत	१२०२
२-	देवदूतका युधिष्ठिरको नरकका दर्शन कराना तथा भाइयोंका करुणक्रन्दन सुनकर उनका वहीं रहनेका निश्चय करना	१२०४
३-	इन्द्र और धर्मका युधिष्ठिरको सान्त्वना देना तथा युधिष्ठिरका शरीर त्यागकर दिव्य लोकको जाना	१२०९
४-	युधिष्ठिरका दिव्यलोकमें श्रीकृष्ण, अर्जुन आदिका दर्शन करना	१२१२
५-	भीष्म आदि वीरोंका अपने-अपने मूलस्वरूपमें मिलना और महाभारतका उपसंहार तथा माहात्म्य	१२१३
	१-महाभारत श्रवणविधि	१२१९
	२-महाभारत-माहात्म्य	१२२६

चित्र-सूची

(सादा)

क्रमसंख्या	विषय	पृष्ठ-संख्या
१-धर्मात्मा शुक और इन्द्रकी बातचीत		३९
२-महर्षि वसिष्ठका ब्रह्माजीके साथ प्रश्नोत्तर		४०
३-भगवान् श्रीकृष्ण एवं विभिन्न महर्षियोंका युधिष्ठिरको उपदेश		१३७
४-भयभीत कबूतर महाराज शिबिकी गोदमें		१९९
५-पृथ्वी और श्रीकृष्णका संवाद		२०६
६-जालके साथ नदीमेंसे निकाले गये महर्षि च्यवन		२५१
७-महर्षि च्यवनका मूल्यांकन		२५४
८-इन्द्रका ब्रह्माजीके साथ गौओंके सम्बन्धमें प्रश्नोत्तर		३२०
९-महर्षि वसिष्ठका राजा सौदाससे गौओंका माहात्म्य-कथन		३३८
१०-भगवती लक्ष्मीकी गौओंसे आश्रयके लिये प्रार्थना		३४८
११-गृहस्थ-धर्मके सम्बन्धमें श्रीकृष्णका पृथ्वीके साथ संवाद		४२१
१२-बृहस्पतिजीका युधिष्ठिरको उपदेश.....		४८७
१३-देवलोकमें पतिव्रता शाण्डिली और सुमनाकी बातचीत		५११
१४-सामनीतिकी विजय		५१६
१५-इन्द्रका भगवान् विष्णुके साथ प्रश्नोत्तर..		५२७
१६-भगवान् श्रीकृष्णकी तपस्या		५४९
१७-भगवान् शंकर श्रीकृष्णका माहात्म्य कह रहे हैं		६८०
१८-भगवान् दत्तात्रेयकी कार्तवीर्यपर कृपा		७१६
१९-शर-शय्यापर पड़े भीष्मकी युधिष्ठिरसे बातचीत.....		७५६
२०-श्रीकृष्ण और व्यासजीके द्वारा पुत्र-शोकाकुला गंगाजीको सान्त्वना.....		७६३

क्रमसंख्या	विषय	पृष्ठ-संख्या
२१-महाराज मरुत्तकी देवर्षिसे भेंट.....		७७६
२२-महाराज मरुत्तका संवर्त मुनिसे संवाद....		७७६
२३-ब्रह्माजीका ऋषियोंको उपदेश		८७८
२४-उत्तंक मुनिकी श्रीकृष्णसे विश्वरूप दिखानेके लिये प्रार्थना		८९३
२५-महारानी मदयन्तीका उत्तंकको कुण्डल-दान		९०७
२६-उत्तंकका गुरुपत्नीको कुण्डल अर्पण करना		९०७
२७-भगवान् श्रीकृष्ण अपने माता-पिता आदिको महाभारतका वृत्तान्त सुना रहे हैं		९१०
२८-अश्वमेधयज्ञके लिये छोड़े हुए घोड़ेका अर्जुनके द्वारा अनुगमन		९३७
२९-अर्जुन अपने पुत्र बभ्रुवाहनको छातीसे लगा रहे हैं		९६०
३०-महाराज युधिष्ठिरके अश्वमेधयज्ञमें एक नेवलेका आगमन		९८०
३१-महर्षि अगस्त्यकी यज्ञके समय प्रतिज्ञा...		९९५
३२-विदुरका सूक्ष्मशरीरसे युधिष्ठिरमें प्रवेश		११३२
३३-व्यासजीके द्वारा कौरव-पाण्डवपक्षके मरे हुए सम्बन्धियोंका सेनासहित परलोकसे आवाहन		११४७
३४-साम्बके पेटसे यदुवंश-विनाशके लिये मूसल पैदा होनेका ऋषियोंद्वारा शाप		११६६
३५-वसुदेवजी अर्जुनको यादव-विनाशका वृत्तान्त और श्रीकृष्णका संदेश सुना रहे हैं		११८२
३६-अग्निकी प्रेरणासे अर्जुन अपने गाण्डीव धनुष और अक्षय तरकसको जलमें डाल रहे हैं		११९२
३७-देवदूतका युधिष्ठिरको मायामय नरकका दर्शन कराना		१२०६